RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-02
Issue-09
September-2017

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com

ईश्वर प्रत्यय गांधी दर्शन

विम्मी रानी

शोध छात्रा

महात्मा गांधी आध्यात्मिक पुरूष थे। सामान्य रुप से सर्वसाधारण की धारणा यह थी कि गांधी जी का वास्तविक क्षेत्र राजनीति का था और वह वहां के लिए उपयुक्त और सक्रिय व्यक्ति थे। यद्यपि वास्तविकता इसके विपरीत थी। गांधी जी की प्रतिभा बहुमुखी थी। यदि वह राजनेता थे तो धर्मसुधारक, धर्मप्रचारक, समाज कल्याण–कर्ता और दीन दुखियों के बन्धु भी थे। स्वयं गांधी जी ने अपने विषय में लिखा है, मेरी राष्ट्र सेवा मेरी आध्यात्मिक साधना है, जिसके द्वारा मैं अपनी आत्मा को शरीर के बंधन से मुक्त करना चाहता हूं। विश्व के नश्वर राज्य की मुझे कामना नहीं है। मैं तो स्वर्ग राज्य के लिए साधना में लीन हूं, जिसे मुक्ति कहते है। अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए गुफा सेवन की आवश्यकता मुझे नहीं दिखती । गुफा तो मेरे भीतर भी मौजूद हैं, यदि मैं उसे जानता हूं। गुफावासी लोग भी हवाई महल की कल्पना में फंस सकता है किन्तु राजमहल वासी जनक ऐसी कल्पनाओं से मुक्त है। शरीर गुफा में और मन संस्कार में रहे तो गुफावासी को ऐसी शान्ति प्राप्त हो सकती है, जिसे वे ही जानते है, जिन्हें शान्ति मिल चुकी है। मेरे लिए तो मोक्ष का मार्ग स्वदेश और निखिल मानवता की सेवा का ही मार्ग हो। मेरी यात्रा मोक्ष और सनातन शान्ति की ओर है। देश भक्ति तो इस युग का पन्थ है।[1]

भारतीय ऋषषि परम्परा में गांधी जी महामानव थे। उन्होंने मानव जीवन को अखंड और सम्पूर्ण रुप मे देखा था, युग कर्दम में जीवन यापन करते हुए भी कमलवत् निर्लिप्त थे। उनका हृदय राम में रमा था वे राममय थे, राम के सच्चे मक्त थे। उनका जीवन आध्यात्मिक साधना का अविच्छिन्न प्रयत्न था। गांधी जी के आचरण में अध्यात्म–चिंतन साकार लगता है। धर्म की साधना को वे अपना ध्येय मानते थे। वे शिक्षा, संस्कृति कला, विज्ञान, उद्योग, सामाजिक आन्दोलन आदि सभी का आध्यात्मिकरण चाहते थे। वे जन्मना हिन्दू थे, पर धार्मिक संकीर्णता से कोंसों दूर थे। वे तो धर्म और राजनीति के घनिष्ठ संबंध के पक्षपाती थे। वे समकालीन परिस्थितियों के दबाव के कारण ही राजनीति में आए थे। उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है कि "यदि मैं राजनीति में भाग लेता हूं तो इसका कारण केवल यही है कि आज राजनीति हमें सर्पकेंचुलियों की भांति घेरे हुए है, जिसके बाहर अत्यधिक प्रयत्न करने पर भी कोई निकल नहीं सकता। मैं इस सर्प से लड़ना चाहता हूं। राजनीति में धर्म लाने का प्रयत्न कर रहा हूं।[2] वे राजनीति में आए तो अपना युगधर्म समझकर । उनके लिए राजनीति में सक्रियता ईश्वराधन है–

युग राजनीति थी तुमको, ध्रुव सत्य प्राप्त की साधन
निष्काम लोक सेवा थी सक्रिय ईश्वर आराधना।[3]

गांधी जी के अनुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है और वही हमारी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति करता है। यहां अध्यात्मदर्शन में ईश्वर, आत्मा, जीव, जगत, कर्म, ज्ञान आदि का तात्विक विश्लेषण किया जाता है। हम यहां स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता की पृष्ठभूमि में इन तत्त्वों का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं

ईश्वर प्रत्यय गांधी दर्शन का केन्द्र बिन्दु रहा है। गांधी दर्शन के शेष तत्त्व इसी केन्द्र के चतुर्दिक विद्यमान थे। यही उनके समस्त विचारों का मूल है तथा विश्व का चरम तत्व है। यदि इनको किसी भवत की तरह ईश्वर मत्त कहा जाए तो कोई भी अतिश्योक्ति नहीं होगी, क्योंकि ईशावास्यमिदं सर्व यत्किचजजगत्यां जगत' उनके अन्दर की श्रद्धा है।

गांधी जी ईश्वर या राम भक्ति पर विशेष बल देते है और सभी व्यक्तियों को भौतिकता से दूर होकर राम से संबंध स्थापित करने के लिए कहते हैं। गांधी जी के राम नाम के आदर्श को स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कवियों ने भी स्वीकार किया है–

तन की पूजा छोड़ो, जोडो प्रभु से नाता।
नश्वर यह संसार एक दिन सब मर जाता"
शांति नहीं और सुख यहीं और यहीं सुखधाम है।
रामनाम सब लिखो पढ़ो, यह सत्य नाम है।[4]

गांधी जी प्रायः, ''ईश्वर अल्लाह तेरे नाम, सबको सन्मति दे भगवान''–नामक शीर्षक का उच्चारण किया करते थे।

राम की महिमा अपरंपार है। रामनाम में अमोघ शक्ति है। गांधी जी चरखा कातते हुए भी राम नाम का स्मरण किया करते थे। गांधी जी के ऐसे ईश्वर राम की महिमा का गायन करते हुए कवि वर नरेन्द्र शर्मा कहते हैं–

[1] गांधी जी, यंग इंडिया, 3 अप्रैल 1924

[2] रामनाथ सुमन, महात्मा गांधी पृ0० 106

[3] सुमित्रानन्दन पंत मध्यावली पांच, लोकायतन पृ

[4] रघुवीर शरण मित्र, जननायक पृ0 55

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

राम नाम पुण्यात्माओं का, अंत समय का धन है।[5]

ब्रह्मगन का यह प्रतीक, ऐसा अनमोल रतन है" दस्यु न कोई छीन सका है, जिसे भक्त के मन से, नष्ट–अभ्रष्ट होता न शस्त्र से, राम भक्त का तन है"

ईश्वर को पहचान न पाने के कारण ही भेदभाव की भावना पनपी है। लोग पत्थर को ही देवता समझ बैठे हैं। डा0 शिव मंगल सिंह 'सुमन' इस बात को इस

प्रकार अभिव्यक्त करते हैं–

ईश्वर ईश्वर में आज पड़ गया अंतर।
टुकड़ों–टुकड़ों में बंटा मनुजता का घर।
ली ओढ धर्म की खाल पर हृदयसूना।
पूजन––अर्चन सब व्यर्थ, देवता पत्थर।।[6]

गांधी जी ने इस भेदभाव को मानवता के लिए अहितकर बतलाया। उनका प्रेम भारत तक ही सीमित नहीं था। वे तो मानवसेवा को ईश्वर सेवा मानते थे और सभी को विश्व प्रेम का मन्त्र सिखलाते थे। कवि बलदेव प्रसाद मिश्र के शब्दों में–

प्रभु का वह अनन्य सेवक, प्रभु की व्यापकता पहचाने,[7]
और विश्व की सेवा उनकी ही सेवा हैं, निश्चय जानें
" ईश्वर कण–कण में

व्याप्त है। श्री नरेन्द्र मोहन की कविता में भी इसी प्रकार के विचार अभिव्यक्त हुए हैं–

हे सर्वशक्तिमान
हे महानों के महान.
मुझे शेष श्वांसे– ।
दो न दो
पर अगले ही क्षण
अपना प्रकाश भर दो।[8]

विश्व में जो कुछ भी घटित होता है, वह ईश्वर की मर्जी से ही होता है। गांधीजी के अनुसार ईश्वर की अनुमति के बिना कुछ भी नहीं हो सकता। इसी प्रकारके विचार कविवर मैथिलीशरण गुप्त ने जयद्रथ–वर्धा में अभिव्यक्त किये है–

किसकी महत्ता थी कि जिसने आज प्रण की पूर्ति की।
हिल जाए पत्ता तो कहीं सत्ता बिना इस मूर्ति की।
चलता 'सुदर्शन' यदि न तो दिन ढल गया होता तभी,
अर्जुन चितानल में कभी का जल गया होता अभी,
होतें तुम्हारें कार्य सारे गूढ़ भेदों से भरे,
हृदयस्थ, तुम जो कुछ कराते, मैं वही करता हरे।[9]

डा0 देवराज, गांधी जी की तरह ही श्निज अहंताश उस विराट के सम्मुख अति क्षुद्र पाते हुए उसे महत्वपूर्ण मानते हैं–

मैं बहुत छोटा हूं, तू बहुत बड़ा
मेरा अस्तित्व तेरी अतुलित विशालता का
एक क्षुद्र टुकड़ा।
फिर भी मेरे साहस को सराह – मैं अक्सर
तेरे समूचे फैलाव को
आंखो की इन पुतलियों पर तौलता हूं।[10]

इस प्रकार स्पष्ट है कि स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी कविता में ईश्वर को सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, अनश्वर, अजर, अजन्मा व दयालु माना गया है।

[5] नरेन्द्र शर्मा, रक्त चन्दन (देवालय) पृ० 37
[6] डॉ0 शिवमंगल सिंह सुमन, विश्वास बढ़ता ही गया (विडम्बना) पृ० 55
[7] बलदेव प्रसाद मिश्र, राम राज्य पृ0 74
[8] नरेन्द्र मोहन, बोध की पूर्णिमा, दैनिक जागरण, 12 मई 2002
[9] मैथिलीशरण गुप्त : जयद्रथ वध : सप्तम सर्म, पृ० 90
[10] डा0 दूवराज, इतिहास पुरुष, डॉ0 मानसिंह वर्मा कृत नयी कविता रू पुरातन सूत्र के पृष्ठ 296 से उद्धृत

© RRIJM 2015, All Rights Reserved